उर्दू की आख़िरी किताब
पतरस बुख़ारी

(पतरस बुख़ारी द्वारा लिखित यह निबंध उर्दू के शैलीकार लेखक मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद की पुस्तक "उर्दू की पहली किताब" की पैरोडी है। पंजाब के शिक्षा विभाग ने मुहम्मद हुसैन आज़ाद से एक पाठ्य-पुस्तक तैयार करवाई थी, जिसे पूरे भारत के स्कूलों में लागू कर दिया गया था। यह निबंध इसी पुस्तक के तीन अध्यायों की पैरोडी पर आधारित है। इसके लिखने का उद्देश्य शुद्ध मनोरंजन था। उर्दू के आलोचक डॉक्टर वज़ीर आग़ा और तमकीन काज़मी ने इस लेख को उर्दू की पहली बाक़ायदा व औपचारिक पैरोडी कहा है। पतरस ने शब्दों के थोड़े से परिवर्तन या मूल वाक्यों में छोटे-छोटे अंश या वाक्य जोड़कर इसे अत्यंत दिलचस्प बना दिया है। पतरस मंझे हुए लिखारी थे। अतः इस निबंध से पैरोडी की कला के व्यावहारिक पक्ष पर भी प्रकाश पड़ता है। इस निबंध का पूरा आनंद तभी लिया जा सकता है जब इसे "उर्दू की पहली किताब" के उन अंशों को सामने रखकर पढ़ा जाए, जिनकी इसमें पैरोडी की गई है। पाठकगण इस पैरोडी का भरपूर रसास्वादन कर सकें, इसलिए निबंध के बाद मूल पुस्तक के पैरोडी-शुदा अंश सम्मिलित कर दिये गए हैं। -अनुवादक)

माँ की मुसीबत

माँ बच्चे को गोद में लिए बैठी है। बाप अंगूठा चूस रहा है और देख-देखकर खुश होता है। बच्चा हस्बे-मामूल आँखें खोले पड़ा है। माँ मुहब्बत भरी निगाहों से उसके मुँह को तक रही है और प्यार से निम्नलिखित बातें पूछती है:

1. वह दिन कब आएगा जब तू मीठी-मीठी बातें करेगा?
2. बड़ा कब होगा? विस्तारपूर्वक लिखो।
3. दूल्हा कब बनेगा और दुल्हन कब ब्याह कर लाएगा? इसमें शर्माने की ज़रूरत नहीं।
4. हम कब बुड्ढे होंगे?
5. तू कब कमाएगा?
6. खुद कब खाएगा? और हमें कब खिलाएगा? बाक़ायदा टाइम-टेबल बनाकर स्पष्ट करो।

बच्चा मुस्कुराता है और कैलेंडर की विभिन्न तिथियों की तरफ़ संकेत करता है। तो माँ का दिल बाग़-बाग़ हो जाता है। जब नन्हा-सा होंठ निकाल-निकालकर शेष चेहरे से रोनी सूरत बनाता है, तो यह बेचैन हो जाती है। सामने पालना लटक रहा है। सुलाना हो तो अफ़ीम खिलाकर उसमें लिटा देती है। रात को अपने साथ सुलाती है। (बाप के साथ दूसरा बच्चा सोता है) जाग उठता है तो झट चौंक पड़ती है और मोहल्ले वालों से माफ़ी माँगती है। कच्ची नींद में रोने लगता है, तो बेचारी मामता की मारी आग जलाकर दूध को एक और उबाल देती है। सुबह जब बच्चे की आँख खुलती है तो खुद भी उठ बैठती है। उस समय तीन बज रहा होता है।

दिन चढ़े मुँह धुलाती है। आँखों में काजल लगाती है और जी कड़ा करके कहती है क्या चाँद सा मुखड़ा निकल आया। वाह वा!

खाना खुद-बखुद पक रहा है

देखना! पत्नी खुद बैठी खाना पका रही है, वरना दरअसल यह काम पति का है। हर चीज़ क़रीने से रखी है। धोए-धाए बर्तन संदूक़ पर चुने हैं, ताकि संदूक़ न खुल सके। एक तरफ़ नीचे-ऊपर मिट्टी के बर्तन धरे हैं। किसी में दाल है। किसी में आटा। किसी में चूहे। फुकनी और पानी का लोटा पास है, ताकि जब चाहे आग जला ले, जब चाहे पानी डालकर बुझा दे। आटा गुंधा रखा है। चावल पक चुके हैं। नीचे उतारकर रखे हैं। दाल चूल्हे पर चढ़ी है। संक्षेप में सब काम हो चुका है। लेकिन यह फिर भी पास बैठी है। पति जब आता है तो खाना लाकर सामने रखती है। पीछे कभी नहीं रखती। खाना खा लेता है तो खाना उठा लेती है। हर रोज़ यूँ न करे तो पति के सामने हज़ारों रकाबियों का ढेर लग जाए। खाने पकाने से फ़ुर्सत पाती है तो कभी सीना ले बैठती है कभी चर्ख़ा कातने लगती है। क्यों न हो? महात्मा गांधी की बदौलत ये सारी बातें सीखी हैं। खुद हाथ पाँव न हिलाए तो डाक्टर से इलाज करवाना पड़े।

धोबी आज कपड़े धो रहा है

बड़ी मेहनत करता है। शाम को भट्ठी चढ़ाता है। दिन भर बेकार बैठा रहता है। कभी-कभी बैल पर लादी लादता है और घाट का रस्ता लेता है। कभी नाले पर धोता है, कभी नदी पर। ताकि कपड़ों वाले कभी पकड़ न सकें। जाड़ा हो तो सर्दी सताती है। गर्मी हो तो धूप जलाती है। सिर्फ़ वसंत ऋतु में काम करता है। दोपहर होने को आई। अब तक पानी में खड़ा है। उसे ज़रूर सन्निपात हो जाएगा। पेड़ के नीचे बैल बंधा है। झाड़ी के पास कुत्ता बैठा है। नदी के उस पार एक गिलहरी दौड़ रही है। धोबी उन्हीं से अपना जी बहलाता है।

देखना! धोबिन रोटी लाई है। धोबी को बहाना हाथ आया है। कपड़ा पटरे पर रखकर उससे बातें करने लगा। कुत्ते ने भी देखकर कान खड़े किए। अब धोबिन गाना गाएगी। धोबी नदी से निकलेगा। नदी का पानी फिर नीचा हो जाएगा।

मियाँ धोबी! यह कुत्ता क्यों पाल रखा है? साहब कहावत की वजह से और फिर यह तो हमारा चौकीदार है। देखिए! अमीरों के कपड़े मैदान में फैले पड़े हैं। क्या मजाल कोई पास तो आ जाए। जो लोग एक दफ़ा कपड़े दे जाएँ फिर वापस नहीं ले जा सकते। मियाँ धोबी! तुम्हारा काम बहुत अच्छा है। मैल-कुचैल से पाक साफ़ करते हो। नंगा फिराते हो।

***

उर्दू की पहली किताब

मुहम्मद हुसैन आज़ाद

माँ की मुहब्बत

माँ बच्चे को गोद में लिए बैठी है। बाप हुक़्क़ा पी रहा है। और देख-देखकर खुश होता है। बच्चा आँखें खोले पड़ा है। अंगूठा चूस रहा है। माँ मुहब्बत भरी निगाहों से उसके मुँह को तक रही है और प्यार से यह कहती है, मेरी जान! वह दिन कब आएगा कि मीठी-मीठी बातें करेगा! बड़ा होगा! सहरा बंधेगा! दूल्हा बनेगा ! दुल्हन ब्याह कर लाएगा! हम बुड्ढे होंगे! तू कमाएगा! खुद खाएगा! हमें खिलाएगा! बच्चा मुस्कुराता है तो माँ का दिल बाग़-बाग़ हो जाता है। जब नन्हा-सा होंठ निकालकर रोनी सूरत बनाता है, तो यह बेचैन हो जाती है। सामने पालना लटक रहा है। सुलाना होता है तो उसमें लिटा देती है। रात को अपने साथ सुलाती है। जाग उठता है तो झट चौंक पड़ती है। कभी नींद में रोने लगता है, तो आधी-आधी रात तक यह बेचारी, मामता की मारी लिए बैठी रहती है। जब सुबह बच्चे की आँख खुलती है तो खुद भी उठ बैठती है। दिन चढ़े मुँह धुलाती है। आँखों में काजल लगाती है, और यह कहती है क्या चाँद सा मुखड़ा निकल आया! वाह वा वाह!

खाना पक रहा है

देखना! पत्नी खुद बैठी खाना पका रही है। हर चीज़ क्या क़रीने से रखी है। धोए-धाए बर्तन संदूक़ पर चुने हैं। एक तरफ़ नीचे-ऊपर मिट्टी के बर्तन धरे हैं। किसी में दाल है, किसी में आटा, किसी में चूहे। फुकनी, चिमटा, और पानी का लोटा पास है। आटा गुंधा रखा है। चावल पक चुके हैं। नीचे उतारकर रखे हैं। दाल चूल्हे पर चढ़ी है। नीचे आँच हो रही है। खुद पास बैठी है कि आग न बुझ जाए या दाल न जल जाए। अब चपनी (ढक्कन) उठाई है। दाल देख रही है। कि गल गई हो तो नीचे उतारकर रखे, करछे में घी गरम करे, कतरकर प्याज़ डाले, जब लाल हो जाए तो दाल बघारे। फिर तवा चढ़ाए, रोटी पकाए। पति जब आता है तो खाना लाकर सामने रखती है। खा चुकता है तो खाना उठा लेती है। खाने पकाने से फ़ुर्सत पाती है तो कभी सीना ले बैठती है कभी चर्ख़ा कातने लगती है। क्यों न हो? बड़ी सलीक़े वाली है। माँ-बहनों की बदौलत ये सारी बातें सीखी हैं। खुद हाथ पाँव न हिलाए तो घर का काम कैसे चले?

धोबी कपड़े धो रहा है

बड़ी मेहनत करता है। शाम को भट्ठी चढ़ाता है। सुबह बैल पर लादी लादता है और घाट का रस्ता लेता है। कभी नाले पर धोता है, कभी नदी पर। जाड़ा हो तो सर्दी सताती है। गर्मी हो तो धूप जलाती है। देखो! दोपहर होने को आई, अब तक पानी में खड़ा है। कपड़े छाँट रहा है। छुआ-छू बराबर कर रहा है। पेड़ के नीचे बैल बंधा है। झाड़ी के पास कुत्ता बैठा है। नदी के दोनों तरफ़ कैसी हरियावल है। देखकर जी खुश होता है।

देखना! धोबिन रोटी लाई है। धोबी कपड़ा पटरे पर रखकर उससे बातें करने लगा। कुत्ते ने भी देखकर कान खड़े किए। अब धोबी नदी से निकलेगा। पेड़ के नीचे छाँव में बैठकर रोटी खाएगा।

मियाँ धोबी! यह कुत्ता क्यों पाल रखा है? साहब यह तो हमारा चौकीदार है। देखिए! अमीरों के कपड़े मैदान में फैले पड़े हैं। क्या मजाल कोई पास तो आ जाए। मियाँ धोबी! तुम्हारा काम बहुत अच्छा है। मैल-कुचैल से पाक साफ़ करते हो। उजले कपड़े पहनाते हो।

***

अनुवादक : डॉ. आफ़ताब अहमद
व्याख्याता, हिंदी-उर्दू, कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क